एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

छत्तीसगढ़ में गुलबहार (डेजी) की खेती

*रिया राजपूत एवं समीर कुमार ताम्रकार
पुष्पविज्ञान एवं भूदृश्य वास्तुकला विभाग, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ. ग.), भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rajpootriya0312@gmail.com



छत्तीसगढ़ में गुलबहार (डेजी) की खेती एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक गतिविधि है, जो राज्य के किसानों के लिए एक अच्छा आय स्रोत प्रदान करती है। यह एक शीतकालीन, एक वर्षीय पौधा है। गुलबहार एक प्रमुख फूलों की फसल है, जो अपने सुंदर और सुगंधित फूलों के लिए जानी जाती है। छत्तीसगढ़ में गुलबहार (डेजी) की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी की स्थितियाँ हैं। राज्य के अधिकांश हिस्सों में गुलबहार की खेती की जा सकती है, लेकिन बस्तर और दंतेवाड़ा जिलों में इसकी खेती अधिक प्रचलित है।

छत्तीसगढ़ में गुलबहार का महत्व और उपयोग

- **सांस्कृतिक महत्व-**गुलबहार का सांस्कृतिक महत्व भी है क्योंकि यह फूल छत्तीसगढ़ की संस्कृति और परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- **त्योहारों और समारोहों में उपयोग-**गुलबहार का उपयोग छत्तीसगढ़ के त्योहारों और समारोहों में भी किया जाता है।
- **सौंदर्य और सुगंध-**गुलबहार की सुगंध और सौंदर्य छत्तीसगढ़ के लोगों को आकर्षित करते हैं।
- **रोजगार के अवसर-**लबहार की खेती से छत्तीसगढ़ के किसानों को रोजगार के अवसर मिलते हैं।
- **आय का स्रोत-**गुलबहार की खेती से छत्तीसगढ़ के किसानों को एक अच्छा आय का स्रोत मिलता है।
- **निर्यात-**गुलबहार की खेती से छत्तीसगढ़ में निर्यात के अवसर भी बढ़ते हैं।

गुलबहार के लिए बीज दर

- गुलबहार के लिए बीज की मात्रा 2–3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है।
- गुलबहार के बीज को 1–2 सेमी की गहराई पर बोना चाहिए।

गुलबहार के लिए नर्सरी

गुलबहार की नर्सरी आमतौर पर 20–25 दिन में तैयार हो जाती है। इस दौरान पौधों को विशेष देखभाल और परिस्थितियों में उगाया जाता है, ताकि वे मजबूत और स्वस्थ हो सकें। नर्सरी तैयार करते समय मिट्टी में गोबर की खाद, वर्मीकम्पोस्ट और जैविक उर्वरक मिलाया जाता है, ताकि मिट्टी की उर्वरता बढ़ सके और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व मिल सकें।

गुलबहार के लिए खेत की तैयारी

गुलबहार लगाने का तरीका

जो पौधे लगाए जा रहे हैं, वे स्वस्थ और मजबूत होने चाहिए। पौधों को पानी देना आवश्यक है। पौध से पौध तथा कतार से कतार की दूरी 20 × 30 सेमी होनी चाहिए। गुलबहार लगाने के लिए उपयुक्त समय नवंबर–दिसंबर है।

खाद एवं उर्वरक

जैविक खाद 10–15 टन प्रति हेक्टेयर गुलबहार के लिए पर्याप्त है। नाइट्रोजन/फास्फोरस/पोटाश को 100/50/75 के अनुपात में गुलबहार को दिया जाता है।

सिंचाई

गुलबहार के लिए नियमित सिंचाई आवश्यक है। पौधों को सप्ताह में कम से कम एक बार पानी देना चाहिए और गर्मियों के दिनों में सप्ताह में 2 बार सिंचाई की जा सकती है।

गुलबहार में खरपतवार नियंत्रण

गुलबहार में खरपतवार नियंत्रण करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि खरपतवार पौधों की वृद्धि और उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं।

खरपतवार नियंत्रण के तरीके

खरपतवारों को हाथ से निकालना एक प्रभावी तरीका है। यह तरीका विशेष रूप से छोटे खेतों में उपयुक्त है।

खरपतवार नाशक: रासायनिक दवाइयाँ भी खरपतवार नियंत्रण के लिए उपयोगी हैं। उदाहरण के रूप में, खरपतवार के उगने से पहले उपयोग की जाने वाली दवाइयाँ—पेंडिमैथलिन 6.67 मिली प्रति लीटर पानी और ऑक्सीफ्लोरोफेन 1.7 मिली प्रति लीटर पानी—उपयोग कर सकते हैं।

प्रमुख कीट

- **एफिड कीट** — ये कीट गुलबहार के पत्तों और तनों पर लगकर रस चूसते हैं।
- **माइट्स** — ये कीट गुलबहार के पत्तों पर लगकर रस चूसते हैं।
- **व्हाइटफ्लाई** — ये कीट गुलबहार के पत्तों पर लगकर रस चूसते हैं।
- **कैटरपिलर** — ये कीट गुलबहार के पत्तों और फूलों पर लगकर उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं।
- **नेमाटोड** — ये कीट गुलबहार की जड़ों पर लगकर उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं।

कीट नियंत्रण: एफिड्स के नियंत्रण के लिए नीम का तेल या थायोमेथोक्साम 0.35 से 0.5 ग्राम प्रति लीटर की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। लाल मकड़ी के नियंत्रण के लिए एबामेक्टिन 20.5 मिली या डाइकोफॉल 2.5 मिली प्रति लीटर की दर से दें।

गुलबहार की तुड़ाई का समय व उपज

तुड़ाई का समय

गुलबहार की तुड़ाई सुबह के समय करनी चाहिए, जब फूल पूरी तरह से खिल जाते हैं। गुलबहार की तुड़ाई शरद ऋतु और वसंत ऋतु में होती है। फूलों को काटने के लिए संक्रमण-रहित कैंची का उपयोग करें। फूलों को बास्केट या टोकरी में रखें। फूलों की पैकेजिंग के लिए जूट की थैली और कोरोगेटेड डिब्बे का उपयोग करें।

उपज

गुलबहार के फूलों की उपज 10–15 टन प्रति हेक्टेयर हो सकती है।

बाजार

बाजार में इसकी कीमत लगभग 40–50 रुपये प्रति किलो की दर से मिल सकती है।